आर्थिक कारकों द्वारा उत्पन्न सामाजिक परिवर्तन
(SOCIAL CHANGES BROUGHT BY ECONOMIC FACTORS)

यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है कि **आर्थिक कारक समाज में किस प्रकार परिवर्तन लाते हैं ?** आर्थिक कारकों की उपर्युक्त विवेचना से यह स्पष्ट हो चुका है कि सभी आर्थिक कारक व्यक्ति और समूहों की आर्थिक दशाओं को प्रभावित करके अथवा नयी आर्थिक दशाओं को उत्पन्न करके सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को प्रोत्साहन देते हैं। विभिन्न क्षेत्रों में आर्थिक कारकों द्वारा लाये जाने वाले सामाजिक परिवर्तनों की विवेचना वर्तमान सन्दर्भ में अत्यधिक प्रासंगिक है।

(1) **सामाजिक सम्बन्धों में परिवर्तन** (Changes in Social Relationships)—सामाजिक सम्बन्धों में होने वाला प्रत्येक परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन की दशा उत्पन्न करता है। जब कभी भी उपभोग, उत्पादन, वितरण की व्यवस्था अथवा आर्थिक नीतियों में परिवर्तन होता है तो लोगों के पारस्परिक सम्बन्धों की प्रकृति में भी परिवर्तन होने लगता है। आर्थिक कारक पहले स्तर में व्यक्तियों के आर्थिक सम्बन्धों में परिवर्तन लाते हैं, जबकि बाद में आर्थिक सम्बन्धों में होने वाला परिवर्तन सामाजिक सम्बन्धों को बदलने लगता है। यही कारण है कि कुछ समय पहले तक जिन समुदायों में घनिष्ठ, प्राथमिक और सरल सम्बन्धों की प्रधानता थी, उन्हीं समुदायों में लोगों के पारस्परिक सम्बन्ध बहुत औपचारिक, हित-प्रधान और जटिल हो गये। सामाजिक सम्बन्धों की प्रकृति में होने वाला यही परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन का मुख्य आधार है।

Scanned with CamScanner

(2) सामाजिक संस्थाओं में परिवर्तन (Changes in Social Institutions)—आर्थिक प्रतिस्पर्द्धा, श्रम-विभाजन तथा औद्योगीकरण वे प्रमुख आर्थिक कारक हैं जो सामाजिक संस्थाओं में व्यापक परिवर्तन उत्पन्न करते हैं। इन आर्थिक कारकों ने ऐसी दशाएँ उत्पन्न कीं जिनमें संयुक्त परिवारों का विघटन होने लगा, एकाकी परिवारों की संख्या में वृद्धि हुई, जाति-व्यवस्था के नियम कमजोर पड़ने लगे, छुआछूत समाप्त हो गयी, विवाह का परम्परागत रूप बदल गया, पारिवारिक तनाव पहले की तुलना में कहीं अधिक हो गये तथा प्रथाओं और परम्पराओं का प्रभाव तेजी से कम होने लगा। शिक्षा में होने वाली वृद्धि, व्यावसायिक परिवर्तन तथा मनोरंजन का व्यापारीकरण भी आर्थिक कारकों द्वारा लाये जाने वाले कुछ प्रमुख परिवर्तन हैं। भारत में जजमानी व्यवस्था और जाति-पंचायतों के प्रभाव को कम करने में भी उत्पादन की नयी प्रणालियों और आर्थिक प्रतिस्पर्द्धा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। स्पष्ट है कि जब कभी भी सामाजिक संस्थाओं में परिवर्तन होता है तो ऐसे परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को बहुत तेज कर देते हैं।

(3) सामाजिक स्तरीकरण में परिवर्तन (Changes in Social Stratification)—सामाजिक स्तरीकरण एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें कुछ विशेष नियमों और मूल्यों के आधार पर सम्पूर्ण समाज एक-दूसरे से उच्च और निम्न प्रस्थिति वाले अनेक समूहों में विभाजित हो जाता है। आर्थिक कारक सामाजिक स्तरीकरण में परिवर्तन उत्पन्न करने वाला सबसे प्रभावशाली आधार सिद्ध हुआ है। समाज में जैसे-जैसे उपभोग, उत्पादन और वितरण की प्रकृति में परिवर्तन होने लगता है, विभिन्न व्यक्तियों की प्रस्थिति और भूमिका भी बदलने लगती है। आर्थिक प्रतिस्पर्द्धा के वर्तमान युग में व्यक्ति की प्रस्थिति का निर्धारण उसकी जाति, परिवार, आयु अथवा लिंग के आधार पर नहीं होता बल्कि व्यक्ति की कुशलता को सबसे अधिक महत्व मिलने लगता है। आर्थिक वर्गों के निर्माण से भी सामाजिक स्तरीकरण का परम्परागत रूप बदलने लगता है। नयी उत्पादन प्रणाली से उत्पादकों और श्रमिकों के बीच ऊँच-नीच के विभेद कम होने लगते हैं। दूसरे शब्दों में, यह कहा जा सकता है कि आर्थिक कारक सामाजिक स्तरीकरण की जगह सामाजिक विभेदीकरण (Social Differentiation) को प्रोत्साहन देते हैं। यह एक ऐसी दशा है जिसमें विभिन्न वर्गों और समूहों के बीच आर्थिक आधार पर एक विभाजन तो बना रहता है लेकिन उनके बीच ऊँच-नीच का कोई संस्थागत रूप नहीं रह जाता।

(4) स्त्रियों की प्रस्थिति में परिवर्तन (Changes in the Status of Women)—समाज के एक बड़े वर्ग की सामाजिक प्रस्थिति में होने वाला परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन की दशा उत्पन्न करता है। औद्योगीकरण, श्रम-विभाजन तथा नयी प्रौद्योगिकी के फलस्वरूप स्त्रियों की प्रस्थिति में व्यापक परिवर्तन हो रहे हैं। मध्यकाल से लेकर स्वतन्त्रता से पहले तक स्त्रियों को सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक जीवन में कोई व्यावहारिक अधिकार प्राप्त नहीं थे। अनेक कुप्रथाओं के कारण उनका सामाजिक और पारिवारिक जीवन उनके शोषण की कहानी कहता है। नयी प्रौद्योगिकी तथा औद्योगीकरण के प्रभाव से जब स्थान-परिवर्तन की प्रक्रिया को प्रोत्साहन मिला, स्त्री शिक्षा में वृद्धि हुई तथा बहुत-से नये व्यवसायों का क्षेत्र खुल गया तो स्त्रियों ने भी आर्थिक जीवन में प्रवेश करना आरम्भ कर दिया। धीरे-धीरे राजनीतिक जीवन में भी उनकी सहभागिता बढ़ने लगी। नयी उत्पादन प्रणाली से उत्पन्न होने वाली जागरूकता तथा मनोवृत्तियों के परिवर्तन के फलस्वरूप उन कुप्रथाओं और रूढ़ियों के बन्धन कमजोर पड़ने लगे जिन्होंने स्त्रियों के शोषण में वृद्धि की थी। स्त्रियों की आर्थिक दशा में जैसे-जैसे सुधार हुआ, सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया भी तेज होती गयी।

(5) सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों में परिवर्तन (Changes in Socio-cultural Values)—व्यक्तियों की मनोवृत्तियों, विचारों और व्यवहारों को प्रभावित करने में सामाजिक मूल्यों का एक बड़ा योगदान होता है। मशीनीकरण तथा नये आर्थिक सम्बन्धों के प्रभाव से हमारे सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्य तेजी से बदलने लगे। एक ओर मनोरंजन का व्यापारीकरण हुआ तो दूसरी ओर, व्यक्ति की भौतिक सफलता उसके सम्मान का प्रमुख आधार बन गयी। धर्म, नैतिकता, पारिवारिक अधिकारों और संस्कारों के प्रति हमारे विचारों में तेजी से परिवर्तन होने लगा। ऐसे सभी परिवर्तन सामाजिक सम्बन्धों की परम्परागत प्रकृति में परिवर्तन उत्पन्न करते हैं।

(6) पारिवारिक संगठन में परिवर्तन (Changes in Family Organization)—नयी आर्थिक दशाएँ परिवार के आकार, परिवार में विभिन्न सदस्यों की प्रस्थिति, सदस्यों के पारस्परिक सम्बन्धों और

Scanned with CamScanner

विवाह की प्रकृति को भी एक बड़ी सीमा तक प्रभावित करती हैं। नयी उत्पादन प्रणाली से स्थान परिवर्तन को प्रोत्साहन मिलने से संयुक्त परिवार की जगह छोटे-छोटे एकाकी परिवारों की संख्या बढ़ने लगी। परिवार में उन व्यक्तियों का महत्व बढ़ने लगा जो आजीविका उपार्जित करने में अधिक योगदान करते हैं। फलस्वरूप एक ओर परिवार के वृद्ध सदस्यों के सामने नयी समस्याएँ उत्पन्न हुईं तो दूसरी ओर, युवा सदस्यों और स्त्रियों को अधिक अधिकार मिलने लगे। परिवार में भी सदस्यों के बीच औपचारिक तथा हित-प्रधान सम्बन्धों का प्रभाव बढ़ने लगा। विवाह की प्रकृति में परिवर्तन होने से परिवार के संगठन में भी परिवर्तन हुआ। विलम्ब विवाह और प्रेम विवाह की बढ़ती हुई प्रवृत्ति से परिवार के परम्परागत मूल्य कमजोर पड़ने लगे। आज पारिवारिक तनाव तथा विवाह-विच्छेद में होने वाली वृद्धि भी परिवार व्यवस्था पर नये आर्थिक सम्बन्धों के प्रभाव को ही स्पष्ट करती है।

(7) **धार्मिक तथा वैचारिक परिवर्तन** (Religious and Ideological Changes)—समाज की परम्परागत धार्मिक और वैचारिक विशेषताओं को प्रभावित करने में आर्थिक कारक सबसे अधिक महत्वपूर्ण सिद्ध हुए हैं। नवीन औद्योगिक प्रणाली, वितरण की व्यवस्था तथा आर्थिक प्रतिस्पर्द्धा ऐसे कारक हैं जिनमें तर्क, विवेक और लौकिकता का अधिक समावेश है। यह आर्थिक कारक पारलौकिक विश्वासों, कर्मकाण्डों और परम्परागत व्यवहारों को महत्व नहीं देते। इसके फलस्वरूप धार्मिक क्रियाओं का सम्बन्ध पारलौकिक जीवन से उतना नहीं रहा जितना कि मनोरंजन के उद्देश्य को पूरा करने से। विभिन्न संस्कारों और कर्मकाण्डों का आयोजन भी आर्थिक हितों को पूरा करने के उद्देश्य से किया जाने लगा। वैचारिक स्तर पर यह धारणा लगातार प्रबल बनती जा रही है कि आर्थिक सफलता के द्वारा ही जीवन में सभी तरह की सफलताएँ प्राप्त की जा सकती हैं। धार्मिक और वैचारिक विशेषताओं में होने वाले ऐसे सभी परिवर्तन सामाजिक सम्बन्धों में परिवर्तन पैदा करके सामाजिक परिवर्तन उत्पन्न करते हैं।

(8) **व्यवहार प्रतिमानों में परिवर्तन** (Changes in Behaviour Pattern)—**लेपियर** का कथन है कि हमारे सभी व्यवहार एक ओर हमारी मनोवृत्तियों को अभिव्यक्त करते हैं तो दूसरी ओर, यह किसी भी सामाजिक और सांस्कृतिक संरचना के प्रतीक होते हैं। इस प्रकार व्यवहारों में होने वाला प्रत्येक परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन की दशा को स्पष्ट करता है। नयी आर्थिक दशाओं के फलस्वरूप व्यक्तियों में स्थान-परिवर्तन की प्रवृत्ति बढ़ी, लोगों ने तेजी से नगरीय विशेषताओं को ग्रहण करना आरम्भ कर दिया, धन के संचय को जीवन के सर्वप्रथम लक्ष्य के रूप में देखा जाने लगा, नैतिक व्यवहारों का रूप बदलने लगा तथा संघर्ष और अपराधी व्यवहारों के द्वारा भी आर्थिक सफलता प्राप्त करने को एक सामान्य व्यवहार के रूप में देखा जाने लगा। वर्तमान युग में जनजातीय और ग्रामीण समुदाय भी अपनी परम्परागत सांस्कृतिक विशेषताओं को छोड़कर व्यवहार के उन नये तरीकों को ग्रहण कर रहे हैं जो नवीन आर्थिक शक्तियों से प्रभावित संस्कृति की विशेषताएँ हैं।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि सभी समाजों की तरह हमारे समाज में भी आर्थिक कारकों ने व्यापक सामाजिक परिवर्तन उत्पन्न किये हैं। इनमें से कुछ परिवर्तन रचनात्मक और उपयोगी हैं, जबकि अनेक दूसरे परिवर्तनों ने समाज के सामने गम्भीर समस्याएँ उत्पन्न की हैं।

Scanned with CamScanner